KALA MANCH
रास कला मंच
सफीदों (हरियाणा)
सौजन्य से:
संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
दिनांकः वीरवार, 24 अगस्त, 2017
स्थानः भरत मुनि रंगशाला, मल्टी आर्ट कल्चर सैन्टर, कुरूक्षेत्र
समयः सायं 6:30 बजे
नागमंडल
नाटककारः गिरिश कार्नाड, निर्देशकः रवि मोहन

ABOUT THE GROUP

'Ras Kala Manch' was founded by an art lover and a social activist Sh. Ras Bihari Ji at a very small city Safidon in Distt Jind of Haryana.

It is flourished by the hard work and efforts of young and dynamic theatre artist Ravi Mohon and Manish Joshi till 2015. In 2015 Manish Joshi left the group and Ravi Mohan proceeded with the group on his own. This theatre group is working well with great enthusiasm and dedication across the country for the last twelve years. Ravi Mohan is a dynamic self-trained theatre artist following the traditional theatre as well as updating his group and team with new trends of performing arts. The group has participated in various national theatre festivals and successfully presented the plays– Naagmandal, Kahan Kahani Kahan, Doosra Aadmi-Doosri Aurat, Mai Kahani Hoon, Chandu Bhai Natak Karte Hain, Hum To Aise Hi Hai, Lakhmigatha, Parsai ki Chaupal and 'Shiv Vivah' and many more. 'Ras Kala Manch' also promotes Haryanvi cultural style through theatre in its events. The group has also played number of times in association with famous organizations like N.Z.C.C. Patiala, W.Z.C.C Udaipur, N.C.Z.C.C Allahabad, Information, Public Relation Department and Culture Affairs. Chandigarh, Haryana Kala Parishad and Multi Art Culture centre, Kurukshetra and many more.

'Ras Kala Manch' also organizes National Theatre Festival 'Chalo Theatre' twice a year. In this festival group invites plays from famous national theatre groups and plays directed by young and senior theatre artists are invited. Every year group honors eight theatre artists from different parts of INDIA with the award “Ras Rang Samman” to encourage them & to promote theatre art.

नाट्य दल के बारे में

रास कला मंच सफीदों की स्थापना इसके संस्थापक कला प्रेमी व समाज सेवी श्री रास बिहारी ने हरियाणा मे स्थित जीन्द जिले के एक छोटे से कस्बे सफीदों मे की। नौजवान और प्रखर रंगकर्मी रवि मोहन और मनीष जोशी की मेहनत व चेष्टाओं से आगे बढ़ी। ये नाट्य संस्था हरियाणा व देशभर मे पिछले 12 वर्षो से रंगकर्म के दायित्व का वीरता और धीरतापूर्वक संवहन कर रही है। सन 2015 में मनीष जोशी 'रास कला मंच' से अलग हुए और अपनी अलग नाट्य संस्था बनाई। इसके पश्चात रवि मोहन जी ने स्वयं रास कला मंच का कार्यभार पूर्णरूप से संभाला। इसके बाद नाट्य दल ने कई नाट्य महोत्सवों में सफल भागीदारी निभाई है। संस्था द्वारा 'हम तो ऐसे ही है' 'नागमंडल', 'कहन कहानी कहन' 'दूसरा आदमी दूसरी औरत' 'मैं कहानी हूँ' 'लख्मीगाथा' शिव विवाह आदि नाटकों की सफल प्रस्तुतियाँ की गई हैं। इनमे से “हम तो ऐसे ही हैं” के 100 से अधिक प्रदर्शन देशभर में हो चुके हैं। रास कला मंच हरियाणा की लोक नाट्य शैली पर भी काम करती आई है। संस्था ने कई चर्चित सांस्कृतिक संस्थानो जैसे:- साहित्य कला परिषद, एन॰ जेड॰ सी॰ सी॰, डब्ल्यू॰ जेड॰ सी॰ सी॰, एन॰ सी॰ जेड॰ सी॰ सी॰, भागीदारी, चुनाव आयोग भारत सरकार, हरियाणा कला परिषद, मल्टी आर्ट कल्चरल सेंटर, सूचना जनसम्पर्क, एवं सांस्कृतिक विभाग चंडीगढ़ आदि के साथ भी कार्य किया है। रास कला मंच वर्ष मे दो बार “चलो थियेटर” के नाम से राष्ट्रीय नाट्य समारोह भी आयोजित करती है। जिसमे देश की प्रसिद्ध नाट्य संस्थाओं, युवा व वरिष्ठ रंगकर्मियो द्वारा निर्देशित नाटको को आमंत्रित किया जाता है। ये संस्था हर वर्ष आठ रास रंग कला सम्मान जो हरियाणा राज्य व देशभर से चयनित रंगकर्मियो को रंगकर्म में उनके योगदान के लिए उनका उत्साह वर्धन करती है।

ABOUT THE WRITER- GIRISH KARNAD

Girish Raghunath Karnad born on 19th May 1938, in Mather, Maharashtra has become one of Indian's brightest shining stars, earning International praise as a playwright, poet, actor, director, critic, and translator. His rise as a playwright in 1960s, marked the coming of age of Modern Indian playwriting in kannada. For four decades karnad has been composing plays, often using history and mythology to tackle contemporary issues. He was conferred Padma Shree (1972) and Padma Bhushan (1974) by the Government of India and won four Filmfare Award. He is among seven recipients of Jnanpith Award for Kannada, the highest literary honor conferred in India. Nagamandala is a folktale transformed into the metaphor of the married woman. It is a Chinese box story with two folktales transformed into one superstition, fact and fantasy, instinct and reason, the particular and the general blend to produce a drama with universal evocations.

नाटककार के बारे में

19 मई 1938 में माथेर, महाराष्ट्र में जन्मे गिरीश रघुनाथ कार्नाड, जो भारत के अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर एक उभरते सितारे के रूप में एक नाटककार, कवि, अभिनेता, निर्देशक, आलोचक और अनुवादक के रूप में प्रशंसा अर्जित करने वाले भारतीयों में से एक बन गए हैं। 1960 के दशक में एक नाटककार के रूप में उनके उदय ने कन्नड में आधुनिक भारतीय नाटक-लेखन को प्रकट किया। पिछले चार दशकों से कार्नाड समकालीन मुद्दों से निपटने के लिए ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं का इस्तेमाल अपने नाटकों के संकलन में किया है। उन्हें भारत सरकार द्वारा पदम श्री (1972) और पदम भूषण (1974) से सम्मानित किया गया और उन्होने चार फिल्मफेयर पुरस्कार जीते। वह कन्नड के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार के सात प्राप्तकर्ताओं में से एक हैं, जो भारत में सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है। नागमंडल की लोककथा विवाहित महिला के रूपक में परिवर्तित हुई। यह एक चीनी बॉक्स कहानी है जिसमें दो लोककथाओं को एक अंधविश्वास, तथ्य और वास्तविकता, वृति और कारण, विशेष और सामान्य तौर पर बदलकर सार्वभौमिक विकास के साथ एक नाटक का निर्माण किया गया है।

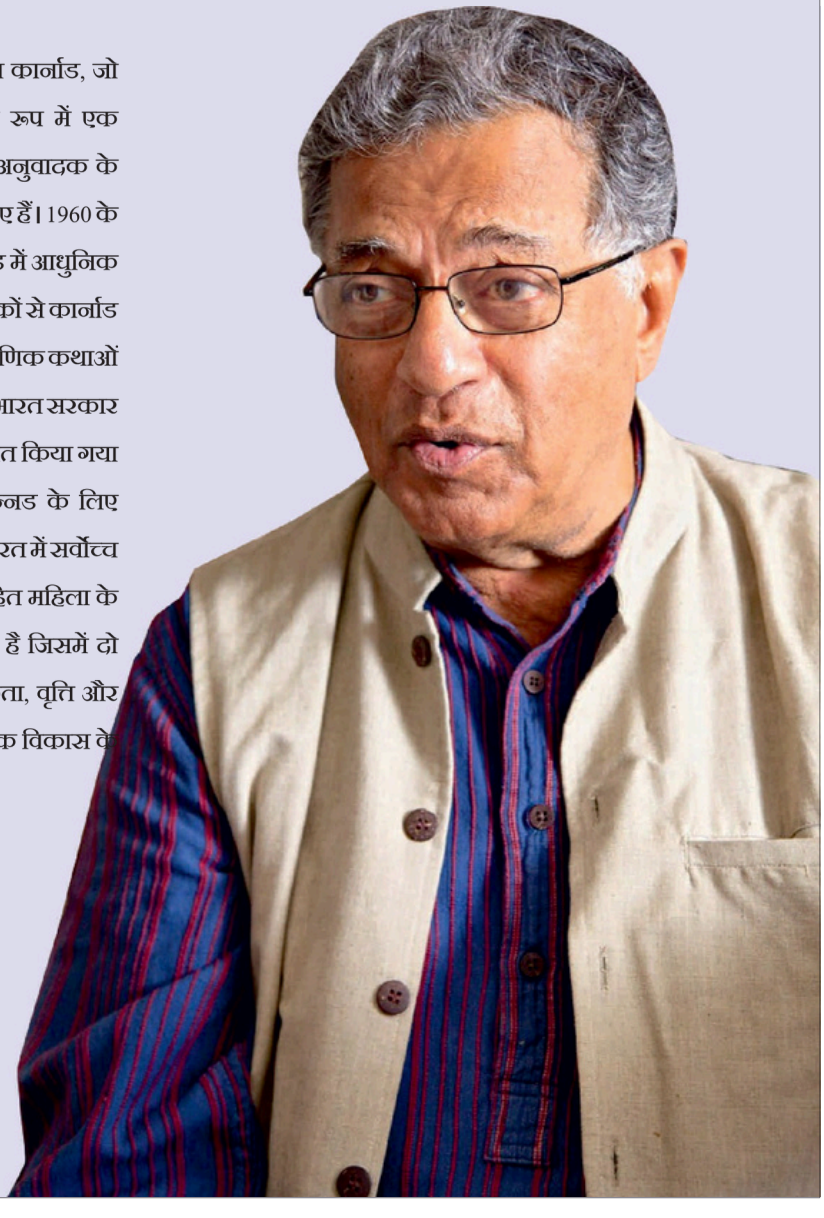

गिरिश कर्नाड

लेखक

ABOUT THE DIRECTOR

Ravi Mohan, a renowned actor, director and trainer is associated with theatre and media for the last two decades. His theatrical journey of creative work has seen him in the lead role in more than fifteen plays. He has both trained as well as provided training in workshop. He is the artistic director of 'Ras Kala Manch', a group of established in 2002 to involve artists of various field in creative encounters. He has directed more than 35 plays and conferred with best director award in 2006, at Pune for “Naagmandala” and also received best director award in 2011 at Amritsar for “Ghasi Ram Kotwal”. He is contributed as actor and director in the national theater festival. He also acted in a T.V. serial named 'Crime Petrol' on Sony T.V. and 'Aur Ek Kahani' (Bahroop) on DD National Channel. He also acted in serial 'Mahara Haryana Mahari Baat' and 'Sabrang' which were telecasted on DD Hissar channel. He always gives credit to Smt. Dolly Ahluwalia and Sh. Kamal Tiwari Ji under whose guidance he had taken training of theatre.

निर्देशक के बारे में

अभिनेता, निर्देशक, प्रशिक्षक और मार्गदर्शक रवि मोहन रंगमंच और मीडिया के साथ पिछले लगभग 22 वर्षों से जुड़े है। 2002 मे इन्होंने अपने पिता श्री रास बिहारी जी के साथ अपना सांस्कृतिक दल 'रास कला मंच', सफीदों के नाम से आरंभ किया और युवा निर्देशक के रूप में पूरे देश भर में अपनी पहचान बनाई। रवि मोहन “रास” ने अभी तक 36 नाटको का निर्देशन और 15 नाटको में मुख्य अभिनेता के तौर पर अभिनय किया है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से इतिहास विषय मे लघू शोध करने के बावजूद इनका रंगमंच में व्यवसायिक रूप से आने का पूरा श्रेय ये श्रीमति डॉली अहलूवालिया तिवारी व श्री कमल तिवारी जी को देते है और ये अपने आपको उनका ऋणी मानते है जिनकी वजह से इन्होने अपनी रंग-शिक्षा संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली व राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के द्वारा आयोजित नाट्य कार्यशालाओं मे ली व वरिष्ठ रंग-शिक्षको से रंगमंच की बारीकियों को सीखने का मौका मिला। इन्होंने भारत देश मे आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नाट्य समारोह मे कई नाटको की प्रस्तुतियां की है। इन्हे अपने नाटको के लिए कई रंग पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं।

रवि मोहन

निर्देशक

DIRECTOR NOTE

I believe that regardless of the relationship between a man and a woman, whether it is father or daughter, husband-wife, brother-sister, lover and girlfriend, till date. The most dramatic writers have pen-down the relations of men and women as the centre of attraction. Legendry drama is based on fiction through fable, but when I read it, it attracted me. When I decided to direct it. I tried to attract viewer's attention by presenting the pangs and emotions of woman's heart through music. If you focus on the story and the plot of this play of the contemporary society is visualize in it. Looking at this drama, I feel that in the heart of every woman, the wishful serpent who comes in the form of her husband in the Nagmandala drama, will always desire to get in her life

निर्देशकीय

मेरा मानना है युगोयुगांतर तक स्त्री और पुरुष के जो भी संबंध रहें हैं चाहे वो पिता-पुत्री, पति-पत्नी, भाई-बहन, प्रेमी-प्रेमिका व एक मित्रता पूर्वक संबन्धो को लेकर ही आज तक अधितकतर नाट्य लेखकों ने स्त्री और पुरुष के संबन्धो को ही अपनी लेखनी के माध्यम से नाटक के केंद्र में स्थापित किया है। नागमंडल नाटक लोककथा के माध्यम से बेसक कल्पना पर आधारित है पर जब-जब मैंने इसे पढ़ा इसने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। जब मैंने इसे निर्देशन करने का मन बनाया तो मेरे मन मे संगीत के माध्यम से एक नारी के मन का उत्पीड़न और उसकी संवेदनाएँ दर्शकों के मस्तिष्क तक प्रहार कर ले जाने का था। अगर इस नाटक की कथा और कथानक पर एकाग्र होकर ध्यान डालें तो आज अपने आस-पास समाज में होने वाली घरेलू हिंसा दिखाई देती है। इस नाटक को देखकर मुझे लगता है कि हर नारी के हृदय में इच्छाधारी नाग जो नागमंडल नाटक में उसके पति का रूप लेकर के उसके जीवन में आता है उसे हर नारी हमेशा पाना चाहेगी।

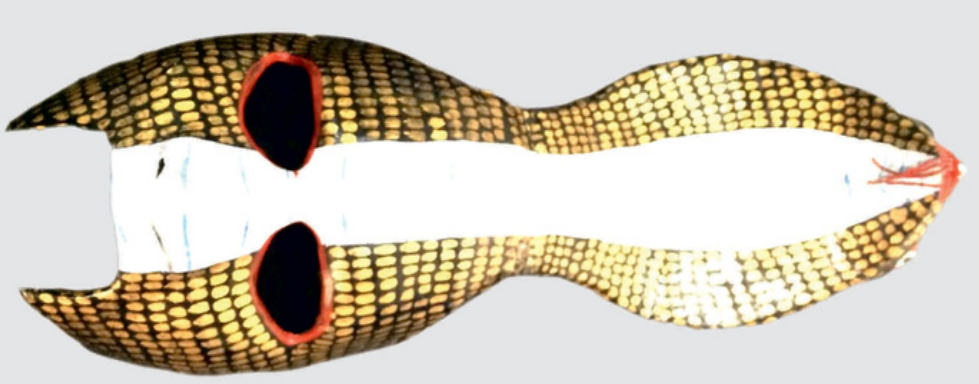

ABOUT THE NAGMANDAL

The Play 'Nagmandala' is based on a folk tale. The two or three folklores are also attached to it. In the Indian narratives it is a popular and powerful story writing to make the desired shape of the snake. Even the renowned writers have been influenced by these myths. Whatever the advancement of science, the literature writer will always remain imaginative. His world will remain different. Whatever he wants to say, he expresses his emotions through imagination and myths emphatically and effectively. This is proved through this play. In the point of view of acting and dialogue, this play of Karnad is as successful as other plays. In addition to this drama, the dramatist has also presented the exploitation of women. If someone else comes to the wife as a husband, then what can she do. The poor lady does not know the secrets of her pregnancy. She is mentally innocent. The man also becomes helpless because of the divine incidents. Knowing that he never went to his wife, he was forced to adopt the child of his wife. This is also an ironic issue that the snake does not bite the child instead gives it life. In this way the rites of snake was performed by that child. These things have been presented by Girish Karnad in a very dramatic and rational manner.

'Taledand' (Sheeshdaan) is the latest play of Karnad. In this, the great revolutionary and social reformer of Karnataka in the twelfth century has raised the current problems on the basis of Basavanna's biography. Caste discrimination has been a long-running problem of our society. Basavanna tried to eradicate this evil from the root, but the problem which is engulfing the society has kept such deep roots that it remains as it is today. Karnad has been very successful in presenting storytelling, portrayal and society in terms of staging. In the words of the Kambar no playwright presents his play in such a perfectionist manner as much as Girish Karnad does.

Karnad first translated his play himself into English and paved the way for other languages. Apart from his last drama 'Taledand', all other plays have been translated not only in native and foreign languages, but have also been successfully dramatized.

नागमंडल के बारे में

नागमंडल इनका एक लोककथा के आधार पर रचा गया नाटक है। इसमें भी दो-तीन लोककथाएँ जुड़ी हुई हैं। भारतीय आख्यानों में नाग का इच्छित रूप धरण कर लेना एक जनप्रिय और सशक्त कथावस्तु रही है। बड़े-से-बड़े लेखक भी इन मिथकों से प्रभावित होते रहे हैं। विज्ञान चाहे जितनी भी उन्नति कर ले पर साहित्यकार कल्पनाजीवी ही रहेगा। उसकी दुनिया अलग ही रहेगी। वह जो कुछ कहना चाहता है उसे कल्पना और मिथक के द्वारा सशक्त और प्रभावशाली ढंग से कह देता है। यह बात इस नाटक से सिद्ध होती है। अभिनय तथा संवादो की दृष्टि से कार्नाड का यह नाटक भी उतना ही सफल है जितने कि दूसरे अन्य नाटक। इसके अतिरिक्त इस नाटक में नाटककार ने नारी के शोषण का दिग्दर्शन भी कराया है। पति के रूप में ही कोई दूसरा आदमी पत्नी के पास आए तो वह क्या कर सकती है? वह बेचारी अपने गर्भ का रहस्य नहीं जानती। वह मानसिक रूप से निर्दोष है। एक पुरुष भी दैवी घटनाओं के कारण निस्सहाय हो उठता है। यह जानते हुए भी कि वह कभी अपनी पत्नी के पास गया नहीं, पत्नी के जाये बच्चे को अपनाने को विवश है। यह भी एक विडम्बना है। नाग बच्चे को नहीं काटता, वह उसे जीवनदान देता है। अतः यों उस बच्चे के हाथ से नाग का संस्कार कराती है। यह सारी बातें गिरीश कार्नाड ने बड़े नाटकीय और तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत की हैं।

'तलेदण्ड' (शीशदान) कार्नाड का आधुनिकतम नाटक है। इसमें बारहवीं शताब्दी में हुए कर्नाटक के महान क्रांतिकारी और समाज सुधारक बसवण्णा की जीवनकथा के आधार पर वर्तमान की समस्याओं को उठाया है। जाति-भेद हमारे समाज की दुरन्त समस्या रही है। बसवण्णा ने उसे जड़ से निर्मूल करने का प्रयास किया, पर समाज को खा जाने वाली इस समस्या ने इतनी गहरी जड़ें जमा रखी हैं कि वह आज भी जैसी की तैसी बनी हुई है। कार्नाड कथावस्तु, पात्र-चित्रण तथा समाज को मंचन की दृष्टि से प्रस्तुत करने में अत्यंत सफल रहे हैं। कंबार के शब्दों में और कोई नाटककार अपना नाटक इतनी बार बाँचकर और तराश कर प्रस्तुत नहीं करता जितना कि गिरीश कार्नाड।

कार्नाड अपने नाटकों का पहले अँग्रेजी में खुद अनुवाद करके दूसरी भाषाओं का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। इनके अंतिम नाटक 'तलेदण्ड' के अतिरिक्त अन्य सब नाटकों का न केवल देशी और विदेशी भाषाओं में अनुवाद ही हुआ है बल्कि सफल मंचन भी हुआ है।

Cast & Credits

Artist Name	Character
Chand Bhardwaj	Madhav
Kiran Dutt	Rani
Ankita Gupta	Rani (Soul)
Gaurav Saxena	Manushya
Deepansh Sharma	Shyam
Raheesh	Budhi Andhi Maa
Dheeraj Sharma	Naag
Shubham Papneja, Gaurav Chauhan, Rajpal, Vikram Malik, Ashish Saini	Jyotiyaan (Chorus)
Karamjeet Singh (Jagga)	Dog
Kahani	Ashish Saini

Play Write	Girish Karnad
Light Design/Operation	Pawan Bhardwaj
Set Execution	Deepak Kumar, Rahul Sharma, Manoj Kashyap, Pardeep, Intzaar, Zahid
Set Design	Sheikh Mushraff
Music Director	Shridhar Nagraj
Music Operation	Sombir Parjapat/Pardeep Bhatia
Costume Design Make-up Choreography	Dr. Madhudeep Singh Yashu Bhardwaj Rakesh Verma
Mask Making	Abhishek Bharati
Video Maker	Kehar Randhawa
Still Photography	Ashish Rattakhera
Stage Manager	Dheeraj Sharma Back Stage: Pardeep Bhatia, Vishal, Gaurav Arora
Director	Ravi Mohan
Dress House	Shivalya Fancy Dress House, Sonipat
Presentation	RAS KALA MANCH, WARD NO.9, NEAR JAYCEES BHAWAN, SAMRAT COLONY, SAFIDON, JIND (HARYANA) 126112 E-MAIL – raskalamanch@gmail.com CONTACT NO.- 92155-12300

प्रस्तुति

रास कला मंच

वार्ड नं. 9, नजदीक जेसीज भवन,
सम्राट कॉलोनी, सफीदों 126112
जीन्द (हरियाणा)

वेबसाईट: www.raskamlamanch.in
दूरभाष: 92155 12300
ईमेल: rasravimohan@gmail.com
raskalamanch@gmail.co